शेष पृष्ठ

हनुमानजी से मेरे आगमन का समाचार सुनकर भरत सेना के साथ मेरी अगवानी करने के लिए आ रहे हैं। जैसे युद्ध में खरदूषण त्रिशरा आदि को मारकर लौटे हुए मुझको लक्ष्मण ने संरक्षित तथा निर्दोष तुम्हें सौंप दिया था, उसी प्रकार भरत भी पिता की प्रतिज्ञा का पालन करने वाले मुझको संरक्षित तथा निर्दोष राज्यलक्ष्मी को सौंप देंगे।

वैदेही! यह देखो, वल्कलवस्त्रधारी भरत पैदल ही गुरु वशिष्ठजी को आगे एवं सेना को पीछे रखकर वृद्ध मन्त्रीयों के साथ स्वयं हाथ में अर्घ्यपात्र लेकर स्वागत करने के लिए मेरे पास आ रहे हैं। ये पिताजी से प्राप्त राज्यलक्ष्मी को तरुण होते हुए भी मेरी भक्ति से भोग के बिना चौदह वर्षों से दुष्कर आचरण कर रहे हैं। रामचन्द्रजी के ऐसा कहने के बाद ही उनकी इच्छा से चलने वाला वह पुष्पक विमान भरत के अनुगामियों द्वारा देखते-देखते आकाश-मण्डल से सहसा भूमि पर उतर पड़ा। बाद श्रीराम ने सेवा में निपुण वानरराज सुग्रीव के हाथ का सहारा लेकर आगे-आगे चलते हुए विभीषण द्वारा प्रदर्शित सोपान-मार्ग से उस पुष्पक विमान से जमीन पर उतरकर कुलाचार्य वशिष्ठजी को प्रणाम करने के बाद भरत के अर्घ्य को स्वीकार करते हुए आनन्दाश्रुओं के साथ उनका आलिङ्गन किया और कुशल प्रश्न आदि से उन मन्त्रियों को अनुगृहीत किया, जो उनके वियोग में दाढ़ी-मूँछ बढ़ाकर वृक्ष के समान विकृत मुख हो गये थे।

अनन्तर श्रीराम ने भरत को सुग्रीव एवं विभीषण का परिचय देते हुए कहा — ये मेरे आपत्ति के बान्धव वानर और भालुओं के राजा सुग्रीव हैं तथा ये मेरे शत्रुओं पर प्रथम प्रहार करने वाले विभीषण हैं। यह सुन भरतजी ने सुग्रीव एवं विभीषण का अभिवादन आदि से सत्कार करने के बाद —

शेष पृष्ठ आगे

नतमस्तक हुए लक्ष्मणजी का सस्नेह गाढ़ आलिङ्गन किया। बाद रामचन्द्रजी की आज्ञा से सुग्रीव आदि वानरों ने कामरूपी होने के कारण मनुष्य-शरीर धारण कर बड़े-बड़े हाथियों पर सवार होकर पहाड़ों पर चढ़ने के सुख का अनुभव किया। अनुचरों के सहित विभीषण आदि श्रीराम के आदेश से उत्तम रथों पर आरूढ़ हुए अनन्तर रामचन्द्र जी भरत एवं लक्ष्मण के साथ शोभित पताका युक्त इच्छानुगामी पुष्पक विमान पर वैसे ही आरूढ़ हुए जैसे बुध एवं बृहस्पति की संगति से दर्शनीय तारापति चन्द्रमा रात में चञ्चल बिजली वाले मेघ पर आरूढ़ होते हैं। विमान पर ही भरत जी ने प्रलय काल में आदि वराह द्वारा उद्धृत पृथ्वी के समान श्रीराम द्वारा रावण के संकट से उद्धृत सीता जी की पाद वन्दना की। रावण की प्रणय प्रार्थना को ठुकराने से परम पवित्र एवं वन्दनीय पतिव्रता सीता का चरण युगल तथा भ्राता राम के अनुसरण से जटायुक्त भरतजी का मस्तक, ये दोनों मिलकर एक-दूसरे को परम पवित्र करने वाले हुए। बाद श्रीराम की शोभा यात्रा आरम्भ हुई।

श्रीराम ने, जिनके आगे-आगे अयोध्या के प्रजाजन चल रहे थे, ऐसे मन्द गति वाले पुष्पक विमान से आधा कोस जाकर शत्रुघ्न द्वारा सजाए गये तम्बू आदि से युक्त अयोध्या के उपवनों में सपरिवार निवास किया।

Renu Devi
24/05/20

राधारमाकान्त सं० महा० सुरवसेना
पूर्णिया

उपशास्त्री साहित्यम् तृतीय-पत्रम्
द्वितीय-खण्ड किरातार्जुनीयम्
प्रथम सर्ग

DOMS Page No.
Date 24 / 05 / 20

① प्र० — सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैरकृष्टपच्या इव सस्यसम्पदः।
वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन्कुरवश्चकासति ॥

प्रसङ्गः — प्रस्तुतोऽयं श्लोकः महाकवि भारवि विरचित किरातार्जुनीयम् महाकाव्यस्य प्रथम सर्गात् समुद्धृतोऽस्ति।
प्रस्तुत श्लोके वनेचरः दुर्योधनस्य कृषिवलैः सुखेन लभ्या सस्य सम्पदः दधद्भिः चकासति। सम्प्रति जनपदे क्षेमकरत्वा

व्याख्या — चिराय तस्मिन् = दुर्योधने, क्षेमं = कुशलं, वितन्वति = क्षेमं करे सति देवः = पर्जन्य एव माता येषां ते, देवमातृका = वृष्ट्यम्बु सम्पन्नव्रीहि पालिताः। कुरवो = जनपदविशेषाः। अकृष्टपच्या इव = राजसूय-यज्ञादिना कर्मकर्तरि क्विप् प्रत्ययान्तो निपातः तद्विपरीता कृषीवलैः = कर्षकैरित्यर्थः। सुखेन = अक्लेशेन, लभ्या = लब्धुं वाक्याः, सस्यसम्पदो दधतः = धारयन्तः।
चकासति = सर्वोत्कर्षेण वर्तन्ते इत्यर्थः।
सम्पन्नजनपदत्वादसन्तापकरत्वाच्च दुःसाध्योऽयमिति भावः।

भावार्थ — दुर्योधनः चिराय प्रजापालन तत्परः सस्य वृद्ध्यर्थं कृत्रिम-नदी (नहर/प्रभृत्युपायैः सेचनोद्योगं विधाय एवं करोति यत् तत्रत्याः कृषकाः विना प्रयासेनैव स्वयं जातानीव सस्यानि लेभिरे।

Renu Devi

राधा उमाकान्त सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णिया

साहित्यम् - शास्त्री - द्वितीय - खण्ड

रघुवंश महाकाव्यम्

(रघुवंशवंश-1 उन्नीसवें प्रयोदश सर्ग का कथासार)

DOMS Page No. / /

① रघुवंशमहाकाव्यस्य त्रयोदश सर्गस्य कथासारः मातृभाषायाम् लिखत?

उत्तरम् → राक्षसराज रावण के वध के बाद मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम ने अग्निपरीक्षा में विशुद्ध सीताजी को स्वीकार कर तथा लङ्का के राज्य पर रावण के भाई विभीषण को अभिषिक्त कर अपनी प्रिय पत्नी सीता, भ्राता लक्ष्मण, कपीश्वर सुग्रीव, भक्त हनुमानजी, विचक्षण विभीषण तथा वानर एवं भालुओं के साथ पुष्पक विमान पर आरूढ़ होकर अयोध्या के लिए प्रस्थान करते समय मार्ग में सीताजी को तत्तत स्थानों को दिखलाते हुए उनका मनोरम वर्णन किया था। श्रीराम ने पहले अपने पूर्वजों से संवर्धित फेनिल समुद्र, उसकी तट भूमि, वायु एवं मेघमार्ग का आकर्षक वर्णन करने के बाद उस दण्डकारण्य को दिखाया, जहाँ राक्षसों के भय से वल्कलधारी तपस्वियों ने पहले निवास करना छोड़ दिया था; फिर उस स्थान को बताया, जहाँ रावण द्वारा हरण के समय उनके पैर से गिरा हुआ एक नूपुर प्राप्त हुआ था और लताओं ने अपने पल्लवों को हिलाकर, मृगियों ने दक्षिण की तरफ मुँह कर सीताजी के जाने का संकेत किया था। बाद माल्यवान पर्वत तथा उस पम्पासर का सुन्दर वर्णन किया है, जिसके जल की मनोहरता के कारण उनकी दृष्टि उसे छोड़ना नहीं चाहती थी। अनन्तर सारस पक्षियों से पूर्ण गोदावरी नदी, पञ्चवटी, स्वर्ग से राजा नहुष को च्युत करने वाले अगस्त्यजी का आश्रम, शातकर्णि मुनि का पञ्चाप्सर नामक सरोवर, सुतीक्ष्ण मुनि, शरभङ्ग मुनि के आश्रम, गगनचुम्बी विचित्र चित्रकूट, निर्मल मन्दाकिनी नदी, अत्रि-मुनि के शान्त तपःस्थान एवं अनसूयाजी द्वारा लायी गई गङ्गाजी का वर्णन है। तीर्थराज प्रयाग में गंगा-यमुना के संगम का मनोहर एवं साहित्यिक वर्णन करने के पश्चात् निषादराज की निवासभूमि शृंगवेरपुर के परिचय के अनन्तर भाई के रूप में मानसरोवर से निर्गत सरयू नदी का सुन्दर वर्णन किया है।

इसके बाद श्रीराम ने कहा - सीते! पृथ्वी से उठती हुई सामने जो धूलि दिखलाई दे रही है, इससे मालूम पड़ता है कि

शेष पृष्ठ अगले

उपशास्त्री (साहित्यम्) तृतीय-पत्रम्
प्रथम-खण्ड किरातार्जुनीयम्-प्रथमसर्गः

DOMS Page No. Date 24 / 05 / 20

② अनारतं तेन पदेषु लम्भिता विभज्य सम्यग्विनियोगसत्क्रियाः।
फलन्त्युपायाः परिबृंहितायतीरुपेत्य संघर्षमिवार्थसम्पदः ॥

प्रसङ्गः— प्रस्तुतोऽयं श्लोकः महाकवि भारविविरचितः किरातार्जुनीयम् महाकाव्यस्य प्रथम सर्गात् उद्धृतोऽस्ति।

अस्मिन् श्लोके वनेचरः तेन पदेषु सम्यक् विभज्य लम्भितैः विनियोगसत्क्रियैः उपायैः संघर्षम् उपेत्य इव परिबृंहितायतयः अर्थसम्पदः फलन्ति।

व्याख्या:→ तेन = राज्ञा, पदेषु = उपादेयवस्तुषु। सम्यक् = असंकीर्णं व्यस्तं च, विभज्य = विविच्य। विनियोगः = प्रयोगः, एव, सत्क्रिया = अनुग्रहः, सत्कार इति यावत्, लम्भिताः = स्थानेषु सम्यक्प्रयुक्ता इत्यर्थः। उपायाः = सामादयः। संघर्षं = परस्परस्पर्धामुपेत्येवेत्युत्प्रेक्षा। परिबृंहितायतीः = प्रचितोत्तरकालाः। अर्थसम्पदः = धनधान्यादिसम्पत्तीः। अनारतं = अजस्रं, फलन्ति = प्रसुवते इत्यर्थः।

शब्दार्थः— तेन = उस दुर्योधन के द्वारा, पदेषु = उचित पदों (स्थानों या व्यक्तियों) में, सम्यक् = अच्छी प्रकार, विभज्य = विभाग करके, लम्भिताः = प्रयोग किये गए। विनियोगसत्क्रियाः = उचित प्रयोग करने से संस्कृत (अनुगृहीत) हुए, उपायाः = उपाय (साम, दान, भेद और दण्ड)। संघर्षम् = परस्पर स्पर्धा की, उपेत्य इव = प्राप्त हुए से, परिबृंहितायतीः = परिबृंहिता = उन्नतशील है आयाति = भविष्य जिनका ऐसी, अर्थसम्पदः = धनधान्यादि सम्पत्तियों को, अनारतं = निरन्तर, फलन्ति = उत्पन्न करते हैं।

Renu Devi

रचना कमाकान्त में महाकवि सुखसेना, पूर्णिया।

साहित्यम् तृतीय-पत्रम्-उपशास्त्री-द्वितीय-खण्ड

किरातार्जुनीयम्-प्रथम-सर्गः

DOMS Page No. Date / /

(2) नेतामध्यमपाण्डवो भगवतो नारायणस्यांशज-
स्तस्योत्कर्षकृते त्ववर्ण्यततरां दिव्यः किरातः पुनः।
शृङ्गारादिरसोऽङ्गमत्र विजयी वीरः प्रधानो रसः
शैलाद्यानि च वर्णितानि बहुशो दिव्यास्त्रलाभः फलम्॥

प्रसंग व्याख्या विधातृनिर्मितनियमवशात् सायं सागररूपायां विपदि
मग्नं विगतप्रभत्वात् प्रकाशहीनं शिथिलकिरणं प्रातस्
तिमिरततिमुदस्योद्यन्तं दिनकरं यथा दिवसलक्ष्मीः
पुनरभ्युपैति तथैव दुर्दैवशात् कालप्रभावाच्च विपत्स-
मुद्रे मज्जन्तं शिथिलविभवं च शत्रुमुदस्य पुनरात्मनः
साम्राज्यप्राप्तये समुद्योगं कुर्वन्तं भवन्तं राजलक्ष्मीः
पुनरभ्युपैतु।

Renu Devi
24/05/20

व्या० उमाकान्त सं०
महावि० सुरवसेना
पूर्णिया।